

सूचनाएँ:

- 1) हस्तलेखन को स्पष्ट लिखिए।
- 2) इस प्रश्नपत्र में चार विभाग हैं A, B, C और D एवं कुल 1 से 55 प्रश्न हैं।
- 3) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं, आंतरिक विकल्प दिये गये हैं।
- 4) दाहिनी ओर प्रश्न के अंक दिये गए हैं।
- 5) सूचना के अनुसार आकृतियाँ स्वच्छ, स्पष्ट के और उचित प्रमाण में बनाएँ।
- 6) नया विभाग नये पन्ने पर लिखिए। प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार दीजिए

विभाग - A (गद्य विभाग)

निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए : [3]

1) बूढ़ी काकी को पत्तलों पर से जूठी पूड़ी के टुकड़े खाता देखकर कौन सन्न रह गया ?

- | | |
|-------------|------------|
| (A) लाडली | (B) रूपा |
| (C) बुधिराम | (D) श्यामा |

2) 'मेरी वेशभूषा ही इस बात का परिचय देती है कि मैं यहाँ का निवासी नहीं हूँ।' यह वाक्य कौन किस से कहता है ?

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| (A) कालिदास दन्तुल से | (B) दन्तुल कालिदास से |
| (C) मल्लिका दन्तुल से | (D) दन्तुल मल्लिका से |

3) लाला सदानंद के कहने पर शादीराम ने पत्रिकाओं के चित्रों का क्या किया?

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| (A) बेच दिए | (B) अलबम बनाया |
| (C) बच्चों को बाँट दिये | (D) दिवारों पर सजा दिये |

सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए: [3]

4) कंपनी के विज्ञापन में लिखा था की महिला उमिदवार आवेदन न करें। (टेल्को, ईन्फोसिस, विडियोकोन, सेमसंग)

5) प्रो. रामिश का ड्रीम प्रोजेक्ट था।

(कृत्रिम मनुष्य बनाना, मानव प्रक्षेपण यंत्र बनाना)

6) रामप्रसाद बिस्मिल के गुरु का नाम..... था।
(श्री सोमदेव, श्री रामदेव)

निम्नलिखित वाक्यों में से सही वाक्यांश चुनकर पुरा वाक्य फिर से लिखिए : [3]

7) इसाई पादरी के अनुसार.....

- (A) हम ज्यों के त्यों पड़े हुए हैं।
- (B) हम जिम्मेदारी नहीं लेते।
- (C) हम लोग अपने काम में गर्व नहीं लेते।

8) लेखक सबसे बड़ा काम.....

- (A) जीवन जीने को मानते हैं।
- (B) खेल को मानते हैं।
- (C) सेवा को मानते हैं।

9) जोन डंकन स्कोटलैंड में रहनेवाले एक.....

- (A) गरीब वहन का भाई था।
- (B) गरीब बुनकर का पुत्र था।
- (C) गरीब मजदूर का बेटा था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए : [2]

10) लेखक श्री प्रकाश के अनुसार सच्चा देशभक्त कौन है ?

उत्तर : लेखक श्री प्रकाश के अनुसार जो अपना कर्तव्य ठीक प्रकार से करता है वही सच्चा देशभक्त है ।

11) बिस्मिल की माताजी का सबसे बड़ा आदेश क्या था?

उत्तर : बिस्मिल की माताजी का सबसे बड़ा आदेश था कि किसी की प्राणहानि न हो । उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : [2]

12) बूढ़ी काकी कब रोती थी ?

उत्तर : बूढ़ी काकी जब घरवाले उनकी ईच्छा के प्रतिकूल कोई बात करते, भोजन का समय टल जाता या उसकी मात्रा कम होती, अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और उसे न मिलती तब वे रोने लगती ।

अथवा

12) आंद्री गीद के अनुसार 'खुश रहना नैतिक उत्तरदायित्व है'। कैसे ?

उत्तर : हमारे व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव हमी तक सीमित नहीं रहता, वह दूसरो को भी पकड़ता है। या यू कहिए कि हमारे सुख - दुःख की धुन दूसरों को भी लगती है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि न आप उदास हो, न दूसरों को उदास करे। इसलिए कहा गया है कि खुश रहना केवल एक जरूरत नहीं, यह नैतिक उत्तरदायित्व भी है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए : [3]

13) लेखक की दृष्टि में मनुष्य को एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे भेजा जा सकता है ?

उत्तर : जिस प्रकार किसी फिल्म को एक खास प्रकार की तरंगों में परिवर्तित करके उसे एक स्थान अर्थात् टीवी स्टेशन से प्रक्षेपित कर दूसरे स्थान यानि कि टीवी सेट प्राप्त कर लेते हैं। उसी प्रकार पहले किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को उसके मूल तत्वों में विभक्त करके, फिर उन तत्वों को एक विशेष प्रकार की तरंगों में परिवर्तित कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजा जा सकता है।

अथवा

13) चोरी का पता लग जाने पर नंदन ने बिन्दु के साथ कैसा व्यवहार किया ? क्यों?

उत्तर : चोरी का पता लग जाने पर नन्दन ने बिन्दू के साथ नरमी से व्यवहार किया और प्रेम से पूछा तो बिन्दू ने स्वीकार कि “बाबू जी थोड़ी सी मेवा नीचे पड़ी थी वह उठा खाया”। यह सुनकर गुस्सा करने की बजाए नंदन बिंदु को कमरे में ले गया और डिब्बा खोलकर एक मुठी मेवा उसके हाथ में देकर उसे खाने को कहा। नंदन यह मानता हैं की घर में सभी चीज़ें सबको बराबर मिलनी चाहिए।

निम्नलिखित कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए: [2]

14) “लड़कों का बूढ़ों के प्रति स्वाभाविक विद्वेष होता ही है।”

उत्तर : बूढ़ो और बच्चो की उम्र में पिढ़ियों का अन्तर होता है। इसलिए दोनों की सोच में भी फर्क रहता है। बूढ़े हर बात को अपने तरीके से सोचते हैं और नई पेढी के लड़के नये ढंग से सोचते हैं, काम करते हैं। इसलिए दोनों की विचारधारा में टकराव होना स्वाभाविक है। इसप्रकार लड़को का बूढ़ो से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है।

अथवा

14) “धन सुख का जादूगर भी है और शांति का डकैत भी।”

उत्तर : जब लोग अमीर बनने की इच्छा में फंस जाते हैं तब वह अंतःकरण की अमीरी खो देते हैं। चाहे कितना भी धन कमाओ, बड़े बड़े आलीशान महक बनाओ लेकिन ऐशो - आराम की जिंदगी से भौतिक सुख ही अवश्य मिलता है पर जब तक भीतर से शांति नहीं मिलती जीवन व्यर्थ है। इसलिए कहते हैं “धन सुख का जादूगर भी है और शांति का डकैत भी”। धन पाकर मनुष्य बाहरी सुख पाता है, लेकिन भीतरी शांति नष्ट हो जाती है।

विभाग - B (५६)

निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए : **[3]**

15) कलधौत के घाम का अर्थ होता

(A) काली यमुना नदी

(B) चाँदी का राजमहल

(C) सोने का राजमहल

(D) कृष्ण का राजमहल

16) भारत का भाल..... है।

(A) माउन्ट आबू

(B) हिमाचल

(C) गिरनार

(D) विंध्याचल

17) खरहा कहाँ रहता था ?

(A) अपने बिल में

(B) जंगल में

(C) झाड़ी में

(D) झाड़ के तने में

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : **[3]**

18) प्रभु स्वामी है तो भक्त..... है।

(धागा, दास)

19) लोमड़ीने.....कहकर कुत्ते को संबोधित किया।

(भाई, मामा)

20) साधु बाहर से.....होता है।

(चालाक, नम्र)

निम्नलिखित वाक्यों में से सही वाक्यांश चुनकर पुरा वाक्य से लिखिए :
[3]

21) मीराबाई ने अपने सद्गुरु की कृपा से

(A) बहुत बड़ा महत्त्व पाया।

(B) राम रतन धन पाया।

(C) लोक लाज खोई ।

22) आजकल के साधू के सामने कोई तर्क करने आये तो वे

(A) अपनी पोल खुल न जाए इसलिए मौन रहेंगे।

(B) अपने को ही ज्ञानी सिद्ध करेंगे।

(C) डर के मारे वाद-विवाद नहीं करेंगे ।

23) 'कुत्ते की सीख' काव्य में दिनकरजी प्राण बचाने के लिए.....

(A) भूखा रहने के लिए कहते हैं।

(B) खुले खेत में दौड़ने के लिए कहते हैं।

(C) सारी शक्ति लगाने के लिए कहते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए : [2]

24) 'जन्मभूमि' काव्य में भारत की किन नारियों की बात बताई गई है ?

उत्तर : जन्मभूमि में भारत की सीता, राधा, सावित्री और अहल्या आदि नारियों की बात बताई गई है ।

25) कवि ने नावों की नगरी किसे कहा है ?

उत्तर : कवि ने नावों की नगरी कश्मीर को कहा है ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : [2]

26) सूखे पेड़ पर तोते को देख इन्द्र को क्यों आश्चर्य हुआ?

उत्तर : तोता बहुत ही सुंदर था और सुंदर वन में बहुत से हरे-भरे पेड़ थे। इन्द्र को इस बात का आश्चर्य हुआ कि तोता यह हरे-भरे पेड़ को छोड़कर सूखे, भारी, खोखले पेड़ पर क्यों बसेरा करता है ?

अथवा

26) लकुटी लेकर रसखान क्या करना चाहते है? क्यों?

उत्तर : लकुटी मिल जाने पर उसे लेकर कवि श्री कृष्ण के जैसे गयो को चराना चाहते है । क्योंकि ईससे कवि को यह अहसास होता है कि वह श्री कृष्ण के निकट है ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए : [3]

27) तोता और इन्द्र का संवाद अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : तोता और इन्द्र का काव्य विश्व का संवाद काव्य माना जाता है । जिसमें तोते और इन्द्र के बीच इस प्रकार संवाद होता है

इन्द्र ने कहा कि इस सुंदर बन में हरा-भरा पेड़ नहीं है कि तुम इस सूखे, निर्जीवित तरु पर बसेरा करते हो ।

तोता बोला - यह तरु सबसे मनोहर , सुंदर और बलशाली था। सभी पक्षियों को यह प्यारा था। इसी पेड़ पर मेरा जन्म हुआ था। यह मेरे सुख दुःख का सच्चा साथी है। लेकिन एक शिकारी के विषभरे बाण के लगने से यह दिन प्रतिदिन सुख रहा है । अब तो इसके साथ ही मेरा अंतिम साथ होगा। इसे छोड़कर मैं शांति नहीं पा सकूंगा ।

तोते की बात सुनकर इन्द्रदेव दंग रह गए और हर्षित होकर तोते की वरदान मांगने को कहा ।

और तोता बोला - “हे देव ! इस तरु को फिर से हरा भरा कर दो। इन्द्र ने तथास्तु कहा और पेड़ फिरसे निराली सुंदरता लेकर लहराया।”

अथवा

27) "भारतवर्ष हमारा है" काव्य से क्या बोध मिलता है?

उत्तर : “भारतवर्ष हमारा है” काव्य से राष्ट्रप्रेम से भरपूर है। इस कविता की रचना हुई तब हमारे देश पर अंग्रेजो ने कब्जा कर लिया था काव्य में कवी ने जनमत के उत्साह को व्यक्त किया है।

कवि कहते हैं की भारत का सृजन अनादि कल से है। इतने प्राचीन भारत के लोगो से " यह भारत हमारा है " वचन सुनकर दुश्मन खीजने लगेंगे । नए युग की आँखों के जलते अग्नि के गूँज को देखकर हमारे सामने आने की कोई हिम्मत नहीं कर सकता। इस तरह यह देश महान है। इस तरह प्रस्तुत काव्य में कवि भारत देश की महानता बताकर प्रत्येक भारतवासी के हृदय में देशभक्ति की भावना को उजागर करना चाहते है।

निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए:**[2]****28) 'जनम-जनम की पूँजी पाई जग में सबै खोवायो।'**

उत्तर : जग में सबै खोवायो यानि की जग में सभी चिजे नाशवंत है। उनका कभी न कभी नाश हो जाता है पर मीराबाई ने जो रामनाम रूपी पूँजी पाई है वह धन ऐसा है कि वह जनम – जनम तक चलेगा। इसका और चीजों की तरह नाश नहीं होता। इसे चोर लूट भी नहीं सकता। इसे कोई खर्च भी नहीं कर सकता।

अथवा**28) “जब भी भूख से लड़ने कोई खड़ा हो जाता है सुंदर दीखने लगता है।”**

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियाँ सर्वेश्वर दयाल सक्सेना रचित 'भूख' काव्य से की गई है कवि कहते हैं कि जब भी कोई प्राणी, पक्षी या मनुष्य भूख से लड़ने के लिए खड़ा हो जाता है सुंदर दीखने लगता है। भूख से लड़ने के लिए वह किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए वह जी-जान लगाता है। तब उसकी वह कोशिश संघर्ष में बदल जाती है। और इस प्रकार कोई भी व्यक्ति या जीव भूख से लड़ने के लिए संघर्ष करता है तब वह सुंदरता की चरम - सीमा पर होता है।

विभाग - C (व्याकरण)**निम्नलिखित कहावत का अर्थ स्पष्ट कीजिए:****[1]****29) लातों के भूत बातों से नहीं मानते।**

उत्तर : बुरे व्यक्ति को दंड की ही भाषा समझमें आती है।

निम्नलिखित शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए।**[1]****30) सहेलगाह पर आये हुए यात्री**

उत्तर : सैलानी

निम्नलिखित संधि को छोड़िए:**[1]****31) सदच्छाएँ**

उत्तर : सत् + इच्छाएँ

निम्नलिखित संधि को जोड़िए:

[1]

32) सदा + ऐव

उत्तर : सदैव

निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

[2]

33) ठंडी आह भरना

उत्तर : दुःखी होना

निम्नलिखित शब्दों का विरोधी शब्द लिखिए :

[2]

34) कोमल

उत्तर : कठोर

35) खर्च

उत्तर : बचत

निम्नलिखित शब्दों का पर्यायवाची शब्द लिखिए :

[2]

36) मेधा

उत्तर : बुद्धि

37) मल्लाह

उत्तर : माझी

निम्नलिखित शब्दों की भाववाचक संज्ञा लिखिए :

[2]

38) डाकू

उत्तर : डाकुपन, डकैती

39) काँपना

उत्तर : कंपन

निम्नलिखित शब्दों की विशेषण संज्ञा लिखिए :

[2]

40) बर्फ

उत्तर : बर्फीला

41) शरीर

उत्तर : शारीरिक

निम्नलिखित शब्दों की कर्तृवाचक संज्ञा लिखिए :

[2]

42) धर्म

उत्तर : धार्मिक

43) विश्लेषण

उत्तर : विशेषक

निम्नलिखित समास को पहचानिए :

[2]

44) नवग्रह

उत्तर : द्विगु

45) रामरतन

उत्तर : कर्मधारय

विभाग - D (लेखन)

निम्नलिखित विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

[3]

46) दूरदर्शन (टी.वी.)

दूरदर्शन (टी.वी.)

सन् 1926 में जे.एल.बेयर्ड ने लोगों को टेलीविजन की भेंट दी । यह रेडियो का ही एक विकसित रूप है । भारत में 1959 में दिल्ली में पहला दूरदर्शन केंद्र स्थापित किया गया । यह दृश्य-श्राव्य माध्यम है ।

दूरदर्शन से प्रसारित कार्यक्रम सेटेलाइट की सहायता से टी.वी. सेट के माध्यम से हम घर में छोटे पर्दे पर देख सकते हैं । पहले प्रसारण केंद्र कम थे अब सेटेलाइट की संख्या बढ़ी, केन्द्रों की संख्याएँ बढ़ीं । सभी केंद्र नाटक, संगीत, कला, सांस्कृतिक कार्यक्रम, समाचार, खेल-कूद, फिल्म इत्यादि का प्रसारण करते हैं । धार्मिक चैनल धर्म प्रचार करते हैं । टीवी के सामने समुचित समय एवं रुचिकर, आनंददायक, बुद्धिगम्य निश्चित कार्यक्रम ही देखने का औचित्य रखना चाहिए वरना आँखें कमजोर हो सकती हैं । शैक्षणिक कार्यक्रमों से पढ़ाई में मन लगता है तथा रुचिकर प्रस्तुति के कारण लाभ होता है ।

अथवा

46) आकाशवाणी

आकाशवाणी

“आकाशवाणी” भारत के सरकारी रेडियो प्रसारण सेवा का नाम है। आकाश से सुनाई जानेवाली वाणी जो विशेष यंत्रों द्वारा ध्वनि तरंगों के माध्यम से कार्यक्रमों के रूप में प्रसारित की जाती है। रेडियो यंत्र द्वारा उसकी तरंग लंबाई को पकड़ कर सुनी जाती हैं।

सन् 1901 में मारकोनी नामक वैज्ञानिक ने रेडियो का आविष्कार किया था। इसकी सहायता से देश-विदेश में होनेवाले कार्यक्रम सुन सकते हैं।

ऑल इंडिया रेडियो, बी.बी.सी. लंदन जैसी संस्थाएँ समाचार, हवामान तथा कार्यक्रम का प्रसारण करती हैं। रेडियो फ्रीक्वेंसी के माध्यम से हम उसे सुन सकते हैं।

अब रेडियो द्वारा हम गीत, समाचार अन्य कार्यक्रम तथा विज्ञापन सुनते हैं।

निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़कर नीचे दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6]

भारत में शिक्षा का आधार अभी भी कक्षागत वार्ता, पाठवाचन व पाठ्यपुस्तकें ही हैं। पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकालयों में उपलब्ध अन्य सामग्री का उपयोग अभी भी हमारे विद्यालयों में सीमित है। व्यक्तिगत रूप से अच्छी पुस्तकें खरीदकर लेना संभव नहीं। फिर दूर-दराज में बिखरे लाखों गाँवों में पत्र-पत्रिकाएँ आसानी से प्राप्त नहीं होती। फलस्वरूप शिक्षक नवचिन्तन से अनजान रहते हैं व छात्र देश-विदेश में घटित महत्वपूर्ण घटनाओं से अपरिचित। उन्हें अपने ही देश के विभिन्न धर्मों, उनके सार्वभौमिक सिद्धांतों, उसकी कला, साहित्य व संस्कृति की विशेष जानकारी नहीं होती। वे पढ़लिखकर भी अनपढ़ से ही रहते हैं, ज्ञान के विस्फोट के युग में भी वे ज्ञान से अछूते, उसके प्यासे।

प्रश्न :

47) आज शिक्षा का आधार क्या है?

उत्तर : आज शिक्षा का आधार कक्षागत वार्ता, पाठवाचन व पाठ्यपुस्तकें हैं।

48) कौन सी शिक्षण सामग्री का उपयोग मर्यादित है?

उत्तर : पत्र - पत्रिकाओं व पुस्तकालयों में उपलब्ध अन्य सामग्री का उपयोग हमारे विद्यालयों में मर्यादित है।

49) शिक्षक नवचिन्तन से अनजान क्यों रहते हैं?

उत्तर : व्यक्तिगत रूप से अच्छी पुस्तकें खरीदकर लेना संभव नहीं, फिर दूर-दराज में बिखरे लाखों गांवों में पत्र-पत्रिकाएं आसानी से प्राप्त में नहीं होती, इसलिए शिक्षक नवचिन्तन से अनजान रहते हैं।

50) छात्र गण किन बातों से अनजान रहते हैं।

उत्तर : छात्रगण देश विदेश में घटित महत्वपूर्ण घटनाओं से अनजान रहते हैं।

51) परिच्छेद के अनुसार छात्रों को कौन-सी जानकारी नहीं होती हैं?

उत्तर : परिच्छेद के अनुसार छात्रों को देश के विभिन्न धर्मों, सार्वभौमिक सिद्धांतों, उसकी कला, साहित्य, संस्कृत की जानकारी नहीं होती।

52) इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : “शिक्षा का आधार” शीर्षक परिच्छेद के लिए उचित है।

निम्नानुसार पत्र लिखिए :

[5]

(53) 5, अंकुर सोसायटी, अहमदाबाद - 380014 से मैत्री मोदी अपनी सखी अपनी सखी तेजल भट्ट को जीवन में अनुशासन का महत्व समझाते हुए पत्र लिखती है।

5, अंकुर सोसायटी
अहमदाबाद - 380014

प्रिय सखी तेजल
नमस्ते,

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला है। दो-तीन दिन पहले मानसी का पत्र मिला। उससे मुझे पता चला की विद्यालय में से अनुशासन भंग करने पर तुम्हें दंड दिया गया है। सखी तेजल अनुशासन हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। अनुशासन चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, हमारी दिनचर्या का, स्कूल का, खेल का हो या अन्य कोई कार्य का उसका महत्व उठा ही रहता है। उसका पालन हमेशा करना चाहिए। तभी हम अपने जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। भविष्य में तुम सदा ख्याल रखोगी की ऐसा कोई भी कार्य न हो जिससे अनुशासन का नियम भांग हो। मुझे विश्वास है।

तुम्हारी प्रिय सखी मैत्री

(54) रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखकर शीर्षक एवं बोध लिखिए :

[5]

एक राजा - बीमारी - वैद्य की असफलता - किसी बूढ़े की सलाह - 'किसी सुखी मनुष्य का कुर्ता पहनों' - खोज - मेहनती किसान को देखना - किसान सिर्फ धोती पहने था - सीख।

चमत्कारी कुर्ता

चन्द्रपुरी नामक एक नगरी थी। जिसमें धर्मसेन नामका एक राजा था। धर्मसेन के पास धन दौलत की कोई कमी नहीं थी। उसने बहुत सुन्दर महल बनाया था। ऐसी कोई चीज न थी जो राजा के पास न हो। बस कमी थी तो सेहत की।

पता नहीं धर्मसेन को कोनसी बीमारी लग गई थी, की वह आएदिन बीमार हो जाता था। आस पास के सभी वैद्य की सलाह लेकर देख ली। पर कोई भी वैद्य राजाकी इस बीमारी का हल ढूँढ नहीं पाया। राजा बहुत ही निराश हो गया।

उसी चंद्रपुरी नगर में चंदनदास नामका बूढ़ा रहता था। वह चतुर और अनुभवी था। एक दिन वह राजा के दरबारमें गया और राजा की बीमारी का एक अजीबोगरीब हल बताया। उसने कहा की राजन आपको अगर अपनी इस बीमारी से छुटकारा पाना है तो किसी सुखी इंसान का कुर्ता पहनना होगा। फिर आपकी बीमारी ठीक हो जाएगी। राजदरबार में उपस्थित सब दरबारी हँसने लगे। वह सोचने लगे की भला किसी का कुर्ता पहनने से बीमारी कैसे ठीक होती है ?

पर राजा अपनी बीमारी से इतना परेशान हो गया था की, उसने यह उपाय भी आजमाने का तय किया। उसने अपने सिपाही को ऐसे इंसान का कुर्ता ले आने को कहा जो सुखी हो। कई दिन बीत गए पर सिपाहीओं को ऐसा व्यक्ति नहीं मिला। आखिर थक हारकर राजने खुद ऐसे इंसान की तलाश शुरू की।

एक दिन राजा को खेतमें एक किसान दिखा। राजा ने सोचा की चलो इस किसान से बात की जाये। राजाने किसान के पास जाकर पूछा की क्या तुम सुखी हो। किसान ने जवाब दिया है मैं रोज अपने खेत में काम करता हूँ और भगवान की दया से मुझे कोई दुःख नहीं है। तो यह सुनकर राजाने उससे कुर्ता माँगा। पर जब राजा की नजर किसान पर पड़ी तो उसने देखा की किसानने तो सिर्फ धोती पहनी थी। कुर्ता तो पहना ही नहीं है।

राजा को समझ आ गया की बूढ़ा चंदनदास उसे क्या समझाना चाहता था। उसे पता चल गया की असली सुख धन दौलत नहीं है। मेहनत ही असली सुख है जिससे मन और शरीर तंदुरस्त रहता है जो सभी सुखों का कारण है।

उसके बाद राजा ने महेनत करना शुरू कर दिया और धीरे धीरे उसकी बीमारी गायब हो गयी।

सीख - इस कहानी से हमें महेनत ही सुखी और स्वस्थ रहने का एक मात्र विकल्प है।

(55) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 150 शब्दों में निबंध

लिखिए :

[7]

मेरी माँ

माँ की महिमा - माँ का प्रेम - माँ की धार्मिकता - मेरे मित्रों आदि से व्यवहार - शिक्षा के प्रति दिलचस्पी - उपसंहार ।

मेरी माँ

माँ ये शब्द है एक ही, अक्षर का । लेकिन उसकी महत्ता बहुत बड़ी है। माँ की महत्ता शब्दी में नहीं लिखी जा सकती। इस शब्द का कोई मोल नहीं है। माँ के प्रेम की कोई सीमा नहीं है। जिसकी गोद में बैठना स्वर्ग के सुख से बढ़कर है। माँ तो प्रेम की मूर्ति है। वह दिन - रात अपने बच्चों और अपने परिवार के सदस्यों की हर इच्छा का ख्याल रखती है।

माँ सवेरे सबसे पहले उठकर घर में पूजा - पाठ करती है। उसे देखकर मैं भी सुबह तैयार होकर भगवान के दर्शन करती हूँ। माँ मुझे हमारी धार्मिक पुस्तक रामायण , महाभारत , गीता आदि का ज्ञान भी देती है। वह मुझे समझाती है की सब धर्मों से बड़ा मानव धर्म है। वह कहती है कि हमेशा इंसान और प्राणियों के प्रति दया रखनी चाहिए। उनकी सेवा करनी चाहिए।

मेरी माँ , माँ होने के साथ साथ मेरी दोस्त भी है। वह मुझे सही गलत का अर्थ बताती है। और भूल होने पर प्यार से समझती भी है। मेरे मित्रों के प्रति भी वह प्यार से बात करती है। उन्हें कभी कभी घर पर बुलाती है , और तरह तरह के व्यंजन बनाकर खिलाती है।

मेरी माँ मेरा आदर्श है , मेरी गुरु है। उसके अच्छे और सच्चे व्यवहार से मुझे एक अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा मिलती है। वह मेरी पढाई का पूरा ख्याल रखती है। वह मुझे नीतिशास्त्र की , वीरो की और वीरांगनाओं के चरित्र की कथाएँ सुनाकर मुझे न्याय , नीति और साहित्यनामा का पाठ पढ़ाती है। मेरी रूचि शिक्षा के प्रति बने रहे उसका ध्यान वह हमेशा रखती है। कहा जाता है कि कि एक माता भी शिक्षक के बराबर ज्ञान देती है। माँ से बढ़कर कोई गुरु नहीं है।

माँ के बिना जीवन की कल्पना भर नहीं कर सकते। एक माँ ही है जो

इस दुनिया में अपने बच्चों को हर स्थिति में प्यार करती है।

अथवा

कोरोना एक महामारी

प्रस्तावना - कोरोना का उद्भव - विश्व पर प्रभाव - महामारी के रूप में - जनजीवन पर असर बचाव के उपाय - सरकार के प्रयास - उपसंहार।

कोरोना एक महामारी

बात है २०२० के मार्च महीने की। भारत के लोगो ने पहली बार एक शब्द सुना 'सोशल डिस्टेंस'। लोगो ने कुछ सुना तो था, की चीन से कोई वायरस आया तो है जो इंसानों की जान ले रहा है, पर लोगो ने उस पर इतना ध्यान नहीं दिया। पर जब भारत में इसके चलते धारा १४४ लगायी गई, की जिसमे चार से ज्यादा लोग एक साथ इकट्ठा नहीं हो सकते, तब लोगो ने इस वायरस 'कोरोना' को गंभीरता से लिया।

धारा १४४ लगते ही चारों ओर कई तरह की अफवाह फैलने लगी। और जहाँ चार लोगो से ज्यादा संख्यामे इकट्ठा नहीं होना था वह लोग जीवन जरूरी चीजों को खरीदने के लिए भीड़ में जमा होने लगे। और सरकार द्वारा लगाए गए कानून का भंग करने लगे। और इसका परिणाम यह आया की देखते ही देखते कोरोना वायरस ने पुरे विश्व को अपने पंजे में जकड़ लिया। और यह एक वैश्विक महामारी बन गया। और आखिरकार न चाहते हुए, हमारे देश की सरकार को लोकडाउन लगाना पड़ा जिसमे हम केवल जीवन जरूरी चीजे जैसे की सब्जी, दूध, किराने का सामान या दवाई लेने के लिए ही बहार निकल सकते थे।

लोकडाउन लगते ही लोगो की हालत पिंजरे में फसे पंछी की तरह हो गयी। और गांव और शहरों में कर्फ्यू का माहोल हो गया। जिनके पास कुछ बचत के पैसे थे उनको थोड़ी राहत थी पर बुरा हाल रोज कमाकर रोज खाने वालों का हो गया। उनके पास न पैसे थे न खाना। लोकडाउन कुछ दिनों से शुरू होकर कई महीनों तक चला। और हर दिन कोरोना से मौत के आंकड़े बढ़ते ही गए। लोग आर्थिक और मानसिक दोनों तरह से हारने लगे। और कई लोग अपने परिवार के सदस्यों को गवाकर बिलकुल टूट ही गए।

सरकार भी इस महामारी से निपटने के लिए तरह तरह के प्रयास कर रही थी। ऐसे में आशा की किरण के जैसी खबर मिली के कई देशोंने कोरोना वायरस के टिके का सफल परीक्षण कर लिया है और वे अब आम इंसानों को दे जा सकते है। हमारा देश भी इस टिके के उत्पादन में जुट गया और कई देशों में टिके को भेज कर मदद भी की। हमारे देश की सरकार ने टीकाकरण का महा

आयोजन किया और देखते ही देखते लगभग सभी क्षेत्रों के लोगो तक कोरोना वायरस का टीका पहुँचा। धीरे धीरे ही सही पर यह महामारी कुछ काबूमें आती दिखाई देने लगी। लोगो ने अपने धंधे रोजगार फिरसे शुरू किये, और जनजीवन वापिस सामान्य होने लगा।

आज भले ही कोरोना की महामारी पर हमने विजय प्राप्त की है पर इसने हमारे मन पर जो छाप छोड़ी है वह कभी भी मिट नहीं सकती। पर साथ साथ हमें यह भी सिखने मिला की समस्या चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, अगर हम साथ मिलकर और डटकर मुकाबला करे तो, विजय सुनिश्चित ही है।

अथवा

स्वच्छ भारत

प्रस्तावना- भारत की वर्तमान स्थिति - अस्वच्छता से हानि - स्वच्छता की आवश्यकता- हमारा कर्तव्य - उपसंहार

स्वच्छ भारत

स्वच्छता का सीधा सम्बन्ध हमारे स्वास्थ्य जुड़ा है। एक शरीर में ही एक स्वस्थ मन निवास करता है। हमारे मानवीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत हुई है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत को स्वस्थ और स्वच्छ बनाना है। इस अभियान का आरंभ 2 अक्टूबर 2014 को किया गया था। आज से सालो पहले महात्मा गाँधी से स्वच्छ भारत का स्वप्न देखा था। जो आज इस अभियान द्वारा साकार होता हुआ नज़र आया।

जब तक इस स्वच्छता का महत्व नहीं समझेंगे तब तक हम अपने आप को सुरक्षित नहीं कह सकते हैं। आज भी कई लोगो कि खुले में शौच कि आदत से बहुत सी बिमारिया फैली है। अपने घर कि सफाई तो लोग रोज करते ह। लेकिन घर में से नीला कचरा लोग सड़को पर फेंक देते है, जिससे वातावरण प्रदूषित हो जाता है। अस्वच्छता हमारे आस पास के वातावरण एवं जीवन को प्रभावित करती है। जो लोग ऐसे स्थान पर रहते है , जहा चारो तरफ कूड़ा -कचरा होता है, गंदे नाले होते है। जिसकी वजह से वह बदबू उत्पन्न होती है। यहाँ रहने वाले लोगो के बीच संक्रमण फैलता है। और इससे बीमारी लागू पडती है।

स्वच्छता एक अच्छी आदत है जो हमारे जीवन कि गुणवत्ता बढाती है। हमे अपने शरीर को बजी स्वच्छ रखना चाहिए। प्रतिदिन सुबह उठकर हमे अपनी दैनिक क्रियाये जैसे कि ब्रश करना , नहाना , बाल बनाना ,स्वच्छ कपड़े पहनना आदि क्रियाये करनी चाहिए। शरीर स्वच्छ रहेगा तभी स्वस्थ रहेगा।

स्वच्छता तन और मन दोनों की खुशी के लिए आवश्यक है।

देश में स्वच्छता रखना सरकार का ही नहीं हमारा भी कर्तव्य है। हम सबको मिलकर सरकार ने जो अभियान चलाया है , उसमे साथ देना चाहिए। हमे हमारी आस पास की जगह स्वच्छ रहे ,यह ध्यान रखना चाहिए। नदियों -तालाबों के पानी को गंदा होने से रोकना चाहिए। बड़े बड़े कारखानों से पानी गंदा न हो ,ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में हर व्यक्ति शौच के लिए शौचालयों का उपयोग करे , इसलिए शौचालय बनाने चाहिए।

देश के सच्चे नागरिक होने के नाते हम यह निश्चय करे की न गंदगी फैलाये और न फैलने दे। यही एक कदम हमारा स्वच्छता की ओर होगा।